चुनावों में मीडिया की भूमिका

*डॉ. संध्या गुप्ता

सारांश

आधुनिक युग में मीडिया के माध्यमों की जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। एक स्वस्थ प्रजातंत्र की मीडिया के बिना कल्पना करना संभव नहीं है। मीडिया की भूमिका स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं ईमानदार होती है जो कि प्रजातंत्र में मतदान के प्रति जनता को जागरूक करता है तथा उन्हें अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग करता है। मीडिया को अब एक ऐसे मंच के रूप में देखा जा रहा है जिससे सरकारी विकास कार्यक्रमों से लोगों को जोड़ा जा सकता है, उनसे फीडबैक प्राप्त किया जा सकता है तथा जनता के द्वारा दिये सुझावों के आधार पर अपेक्षित परिवर्तन भी किये जा सकते हैं। अर्थात् मीडिया प्रजातांत्रिक चुनावों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रहरी के रूप में कार्य करता है।

मुख्य शब्द : चुनाव, मीडिया, प्रिंट मीडिया, प्रजातंत्र

प्रस्तावना

तकनीकी विकास के हर दौर में मीडिया का सत्ता और सरकार से अहम् रिश्ता रहा है। भारत में अंग्रेजों के शासनकाल के समय प्रिंट मीडिया यानी प्रेस की भूमिका का जिक्र हो या अंग्रेजों के जाने के बाद दूरदर्शन और आकाशवाणी के जरिये सरकारी योजनाओं व नीतियों का प्रचार–प्रसार की बात हो, मीडिया सरकार की नीतियों व योजनाओं को व्यापक लोगों तक पहुँचाने में अहम् भूमिका निभाती रही है।

आधुनिक युग में मीडिया के माध्यमों की जनमत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। आज अत्यधिक तीव्र गति से सामाजिक परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के अनुकूल नागरिकों में मानसिकता विकसित करना अनिवार्य है। यदि परिवर्तनों के प्रति अनुकूल मानसिकता विकसित नहीं होती है तो परिवर्तन की गति प्रभावित होने लगती है तथा इसके लाभ भी अधिकांश लोगों को नहीं मिल पाते हैं। जनसंचार के माध्यम परिवर्तन के अनुकूल एवं इसे प्रोत्साहन देने वाले स्वस्थ जनमत का निर्माण कर समाज को महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

मीडिया के माध्यम सरकार की गलत नीतियों के विरोध में जनमत का निर्माण कर सरकार पर अंकुश लगाने का कार्य करते हैं। कोई भी सरकार जनसंचार के माध्यमों द्वारा निर्मित जनमत की अवहेलना का साहस नहीं कर सकती है। इसीलिए प्रजातांत्रिक व्यवस्था में संचार के जनमाध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा सभी नीतिगत मुद्दों पर सहमति तथा असहमति से संबंधित जनमत का निर्माण इन्ही माध्यमों द्वारा होता है।

मीडिया के माध्यम सरकार के हाथ में ऐसे सकारात्मक यंत्र हैं जिनके द्वारा वह अपनी नीतियों को जनता तक पहुँचाती है तथा उसके समर्थन के प्रति जनता का जनमत जुटाने का प्रयास करती है। इससे सरकार को अपनी नीतियों को बनाने एवं लागू करने में सहायता मिलती हैं। सरकार बड़े पैमाने पर राजनीतिक परियोजना हेतु जिस जनमत का निर्माण करती है उसमें भी संचार के जन माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

प्रजातंत्र बिना मीडिया के चल ही नहीं सकता। इस पर लोगों का मत भिन्न भिन्न है लेकिन इस मत पर सभी सहमत हैं कि मीडिया का प्रजातंत्र में सबसे अहम कार्य निगरानी करना है। सूक्ष्म निरीक्षण और सरकार के कार्यो को जनता के सामने लाने, जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधियों तथा सरकार के विभिन्न अवयवों पर समाचार एवं निष्पक्ष विचार देने से स्वस्थ जनमत का निर्माण होता है जिससे मतदाता एक समर्थ सरकार का चुनाव करते है। इसके अलावा मीडिया देश के मतदाताओं को उनके प्रजातांत्रिक अधिकारों के बारे में जागरूक करने, चुनाव के समय रिपोर्टिग करने, राजनीतिक पार्टियों को अपने वोटर से संचार के लिये मंच प्रदान करने, चुनाव के समय विभिन्न मुद्दों पर बहस करने, वोट डालने, परिणाम का विश्लेषण करने आदि का कार्य करती है।

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है और प्रत्येक व्यक्ति कहीं ना कहीं इस नेटवर्क से जुड़ा है जो कि अत्यंत प्रभावी और तीव्रगामी है। यहाँ तक कि अशिक्षित लोगों में प्रिन्ट मीडिया अर्थात् समाचार–पत्र एवं पत्रिकाएँ–निरर्थक हो जाती हैं परन्तु दृश्य –श्रव्य मीडिया जैसे कि रेडियों एवं सिनेमा द्वारा ऐसे समाजों में स्वच्छ एवं प्रभावी जनमत का निर्माण हो सकता है। अशिक्षित समाजों में केवल श्रव्य या दृश्य मीडिया ही आसानी से पहुँच सकती है और उनके लिए यह ही असरदार और प्रभावी साधन है। अतः मीडिया की भूमिका स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं ईमानदारी पूर्ण होनी चाहिए, जिससे कि प्रजातंत्र में मतदान के प्रति जागरूकता जाग्रत हो सके और लोग अपने उत्तरदायित्व के प्रति सजग रहें।

आज जनमत निर्माण में सोशल मीडिया, प्रिंट मीडिया, नेटवर्किंग, वेब साइटों जैसे फेसबुक, ट्विटर, यू–ट्यूब, लिंक्डइन, पिंटेरेस्ट, माइस्पेस, और ऐसे ही अन्य प्लेटफॉर्म पर इस्तेमालकर्ताओं को विचार–विमर्श, सृजन, सहयोग करने तथा टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो और वीडियो रूपों की शक्ति और प्रजातंत्र को सुदृढ़ बनाने की उसकी संभावनाओं को अब विश्व की तमाम सरकारों ने स्वीकार कर लिया है। सोशल मीडिया को अब एक ऐसे मंच के रूप में देखा जा रहा है जिससे सरकारी विकास कार्यक्रमों से लोगों को जोड़ा जा सकता है, उनसे फीडबैक प्राप्त किया जा सकता है, भ्रष्टाचार पर काबू किया जा सकता है और लोगों को सशक्त बनाया जा सकता है। परंतु यह कहना सर्वथा उचित नहीं होगा कि यह माध्यम अपने आप में ही ये सभी लक्ष्य प्राप्त कर सकता है, क्योंकि अभी इसकी पहुँच देश की जनसंख्या के कुछ प्रतिशत लोगों तक ही है। भारत में सोशल मीडिया का सक्रियता से उपयोग करने वालों की संख्या लगभग 6 करोड़ 60 लाख है, परंतु सस्ते ब्रॉडबैंड कनेक्शन और इंटरनेट युक्त कम कीमत वाले मोबाइल हैंडसेट्स की उपलब्धता बढ़ने के कारण यह संख्या तेजी से बढ़ रही है। सरकार के कार्यक्रमों को कागज से जमीन पर उतारने के लिए नीति–निर्माताओं और सार्वजनिक निकायों के लिए संभावनाएं अब असीम हो गई है। निश्चित रूप से इससे देश के प्रजातांत्रिक संस्कारों में गहराई और संपन्नता आ रही है।

मीडिया की भूमिका

चुनाव अभियानों के दौरान मीडिया मतदाताओं को शिक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है ताकि वे उचित विकल्प चुन सकें। लोकसभा चुनाव में राजस्थान पत्रिका ने चुनाव कवरेज के लिए आधिकारिक तौर पर चुनाव डेस्क का गठन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य राजनीति में लोगों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए न सिर्फ उन्हें जानकारी देना था बल्कि उदाहरणों के जरिये उन्हें जागरूक करने का प्रयास किया जो निम्न हैं – वंशवाद, अपराधीकरण, जातिवाद, चुनावी ख़र्च पर रोक, राजनीतिक स्तर का पतन, भ्रष्टाचार, अनिवार्य मतदान, महिलाओं में राजनीतिक सशक्तीकरण आदि। लोगों को शिक्षित करने के लिए मीडिया निम्नलिखित भूमिका निभा सकता है;

- मीडिया नागरिकों को ऐसी कहानियों के माध्यम से शिक्षित कर सकता है जो राष्ट्रीय स्थिति को प्रभावी ढंग से समझाती हैं ताकि नागरिक देश की विकास प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सकें।

- मीडिया आम आदमी की भाषा में विशिष्ट कानूनी और प्रशासनिक मुद्दों पर जोर दे सकता है जो स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनावों के संचालन के लिए आवश्यक हैं।
- मीडिया लोगों को मतदाताओं के रूप में पंजीकृत होने और मतदान के अपने मौलिक अधिकार का उपयोग करने के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षित कर सकता है।
- मीडिया सभी राजनीतिक उम्मीदवारों को अपने घोषणापत्र जनता के सामने पेश करने के लिए एक मंच प्रदान कर सकता है।
- मीडिया उन दलों और उम्मीदवारों को बेनकाब कर सकता है जो किसी भी प्रकार की हिंसा को भड़काते हैं जिससे नागरिक ऐसी स्थितियों से अच्छी तरह वाकिफ हो सकते हैं।
- मीडिया मतदाताओं को वोट खरीदने या पार्टी के वित्तपोषण के अवैध तरीकों को उजागर कर सकता है।
- मीडिया उन लोगों को भी बेनकाब कर सकता है जो नागरिकों को नकारात्मक तरीके से प्रभावित करने के उद्देश्य से अभियानों में आक्रामक या अभद्र भाषा का प्रचार करते हैं।
- मीडिया उन उदाहरणों को सामने लाने का प्रयास कर सकता है जहां राजनीतिक दल प्रजातांत्रिक प्रणालियों के कामकाज में बाधा डालते हैं
- मीडिया चुनावों में मतदाताओं की भागीदारी और सरकारी प्रणाली के सभी पहलुओं में उनकी भागीदारी के महत्व को बढ़ा सकता है।
- पत्रकारों को आम लोगों के मुद्दों पर ध्यान देने की कोशिश करनी चाहिए, जिनके पास समाज में मजबूत आवाज की कमी है, जैसे कि महिलाएं, युवा, बूढ़े और समाज के अल्पसंख्यक वर्ग आदि।
- मीडिया को नागरिकों की आवाज उठाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और नागरिकों को उनकी प्रतिक्रिया वापस देनी चाहिए ताकि वे अपने वोट के बारे में सूचित निर्णय ले सकें।
- मीडिया, अपने एजेंडा–सेटिंग में, विभिन्न विचार और निष्पक्ष जानकारी प्रदान कर सकता है और सूचना के सतत प्रवाह में योगदान दे सकता है।

इस प्रकार मीडिया की तमाम सकारात्मक योगदानों के चलते ही एकमंड बुर्के ने इसे 'फोर्थ स्टेट' अर्थात प्रजातंत्र के 'चौथे स्तंभ' की संज्ञा दी है। मीडिया को 'राजनीति की तंत्रिका' भी कहा जाता है, क्योंकि यह चुनावों के समय मुद्दों का सकारात्मक व नकारात्मक विश्लेषण करने, आमजन को जागरूक करने, लोकवार्ता व लोकसंवाद को बढ़ावा देकर लोगों की राय का निर्माण करने के साथ–साथ चुनावों की मॉनीटरिंग द्वारा प्रजातांत्रिक संस्कृति का पोषण करने का कार्य भी करता है। हाल ही में प्रचलित हुए फेसबुक व ट्विटर जैसे सोशल मीडिया के जरिये दो तरफा संवाद द्वारा जननीतियों के निर्माण व क्रियान्वयन में जनता की भागीदारी तेजी से बढ़ी है।

निष्कर्ष

प्रजातंत्र और प्रजातांत्रिक परियोजना के फलने–फूलने के लिए मीडिया की महत्वपूर्ण और आवश्यक भूमिका है। एक स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव का मतलब केवल चुनाव कराना और वोट देने के अधिकार का प्रयोग करना ही नहीं है,

बल्कि इसका मतलब यह है कि नागरिकों को चुनाव के संचालन, राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों और उनके घोषणापत्र और नीतियों और उनके पिछले चुनाव के बारे में कितनी जानकारी है। मीडिया ऐसी सूचनाओं के स्रोतों में से एक है। इसके अलावा, मीडिया प्रक्रिया की पारदर्शिता की रक्षा करते हुए, प्रजातांत्रिक चुनावों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रहरी के रूप में कार्य करता है। वास्तव में, मीडिया की स्वतंत्रता के बिना प्रजातांत्रिक चुनाव, एक बड़ी चुनौती है। चुनावी प्रक्रियाओं में पारदर्शिता, निर्वाचित प्रतिनिधियों की जवाबदेही सुनिश्चित करने और लोगों की बेहतरी के लिए स्वतंत्र, निष्पक्ष और मजबूत मीडिया आवश्यक है। अपनी भूमिकाओं को पूरा करने के लिए, मीडिया को अपने कवरेज में उच्च स्तर की व्यावसायिकता, सच्चाई और तटस्थता बनाए रखने की आवश्यकता है। विनियामक प्रथाएं पत्रकारिता में उच्च मूल्यों और मानकों को सुनिश्चित करने में मदद कर सकती हैं। कानूनों और विनियमों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ–साथ सक्रिय रूप से भाग लेने की स्वतंत्रता सहित मीडिया की स्वतंत्रता की गारंटी देनी चाहिए।

***व्याख्याता**
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय
कोटा (राज.)

संदर्भ सूची

- अगनानी, कन्हैया (1999). पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।
- अनुजा, मंगला (1996). भारतीय पत्रकारिता : नींव का पत्थर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
- आहुजा, गुरुदास (2006). भारतीय राजनीति में भाजपा का आगमन, राज कम्पनी प्रकाशन, दिल्ली।
- कुलश्रेष्ठ, विजय (2007). हिन्दी पत्रकारिता एवं सर्जनात्मक लेखन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- कुमार, बिजेन्द्र (2007). हिन्दी पत्रकारिता और भूमण्डलीकरण, प्रकाशक श्री नटराज प्रकाशन, प्रथम संस्करण।
- जैन पुखराज, (2012). संसदीय व्यवस्था पुर्नविचार की आवश्यकता, साहित्य भवन
- पब्लिकेशन्स, आगरा।
- पाण्डेय, जयनारायण, (2010). भारत का संविधान, सेन्ट्रल लॉ एजेन्सी, तैंतालिसवां संस्करण, इलाहाबाद।